जारी है, यह सत्य की यात्रा।

सुबह सूरज की किरणें इसकी कोमल मुख पर पड़ा। वह अपनी छोटी सी आँखें बड़ी मुश्किल से खुली। इसकी चेहरे में रात भर जागने की थकान व्यक्त था।

"एक और सुबह.." वह अपने मन में सोचा।

"इमली.. जल्दी उठो.. क्या तुम्हें आज कॉलेज नहीं जाना? माँ ने आवाज दी।

"आई.." वो अपने डॉबल लेकर स्नान करने गई। शॉवर की नीचे खड़े हुए वो आँखें बंद करकर पानी को मुख में बहने दी। उस ठंडी पानी शरीर पर बहने पर भी उसे जलने का एहसास हुआ। इसकी सोच कुछ दिन पहले की बात पर अटक गई।

इमली और इसकी परिवार इस दिल्ली की छोटी सी शहर में आकर सिर्फ दो हफ्ते हुए है। वह अपनी पास के एक कॉलेज में ही पढ़ती है।

वह रोज पैदल ही आती-जाती है। कुछ दिन पहले वो शाम को समय घर आ रही थी। स्पेशल क्लास के कारण वो देर हो रही थी। इसलिए घर पहुँचने के लिए वो आसान रास्ता चुना। उस रास्ता एक विजन रास्ता है। वह उस रास्ते पर चलने लगी। तब वो एक छोटी सी धीमी आवाज सुनी। कुछ देर वहीं खड़ी होकर ध्यान दी तो फिर से सुनी। वो उस आवाज़ की ओर चलने लगी। एक पुरानी बिल्डिंग से था। वो उस बिल्डिंग की खिड़की से अंदर देखी। उस दृश्य को लेकर वो एक शिला के समान खड़ी रही। वह उसे क्या करे - क्या न करे, यह समझ नहीं पाया। एक आदमी एक लड़की की गला दबाकर मारने की कोशिश कर रही थी। उस लड़की को तुरंत इमली ने पहचाना। मानू, उसकी क्लास में थी। वो श्वास नहीं ले पा रही थी। वह मृत्यु की ओर जा रही थी। इमली ने एक कदम लगाई तो एक पत्थर उसे सन्नाटे को भेद कर दिया था।

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 335

उस आदमी देखने से पहले ही इमली वहाँ से निकल गई। वह जल्द ही घर पहुँचकर अपने कमरे में जाकर बैठ गई। किसी से कुछ नहीं कहा। यह बात उसे हिला दिया था। अगले दिन मालु की मृत्यु की खबर सुनकर वो टूट गई। वह अपने आप को सम्हाल नहीं पाया। "मैं उसे बचा सकती थी..." - इस बात उसे मन ही मनी पीड़ा दिला दी।

वह अगले दिन ही मालु की पापा से मिलने गई थी। तब पता चला कि मालु को कई दिनों पहले एक आदमी ने प्रेम-प्रस्ताव रखा था। किन्तु मालु ने स्वीकार नहीं की। वो आदमी तब से उसे परेशान कर रही थी, मारने की धमकी दी थी। आखिर वो बेटी-पापा ने पुलीस से कंपलैंड भी की। पापा को जरूर लगता था कि वो आदमी ही प्रतिकार स्वभाव में यह कृत्य कार्य की होगी। उस आदमी को चित्र देखकर मालु भी उसे पहचान लिया था। मालु उस दिन में हुई सब कुछ

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

याद को। उसे बुरा लगी। वह एक काफी निश्चय करके उठी।

पिछले यादों को हटाकर वो अपने आँखें खोली। जल्दी से नहाकर चलने के लिए तैयार हुई। वह कुछ देर चलने के बाद एक रिक्शा पकड़कर चली। "पुलीस स्टेशन" वह अपनी मंज़िल बता दी।

स्टेशन के सामने रिक्शा खड़ा हुआ। उस रिक्शा से उतरी बाहर आई। "मैं आज जो कुछ भी करने जा रही हूँ, मुझे पूर्ण विश्वास है वो ही सबसे सही है।" यह सोचकर वो पुलीस को उस दिन की सारी बात बताई। वो उस आदमी को पहचानने में मदद की। वह केस के पीछे वो दिन-रात मानु को नीती के लिए प्रयत्न की। आखिर वो सही भी बनी। उस आदमी को उसकी करतूतों के लिए कठोर शिक्षा भी दिलाई। यह एक लंबी यात्रा की शुरुआत था।

इमली नियम की सही जानकारियों को प्राप्त करके एक नियम वादक बनी। "इमली राजशेखर" की नाम सुनते ही सब ईश्वर की स्मरण करती हैं। ~~जन्म~~ जान से पहले सत्य को रखनेवाली देवता बनी वो। निरपराधियों और निरालंब स्त्रीयों के लिए देवतातुल्य हैं पर अपराधियों के लिए काली थी वो।

एक बड़ी केस जीतकर कोर्ट से बाहर आते एक रिपोर्टर ने प्रश्न उठाया। - "आपको इस तरह सशक्त कौन बनाया?"

उसकी वह प्रश्न को इमली ने एक मुस्कुराहट से स्वीकार ली। उसने जवाब दी।

"पता नहीं .. लगता है ईश्वर ने ही बनाया.. जब मैं सत्य को अपनी डर से चुपाया, तो वो डर एक जान ले ली थी। जब मैं वो डर को हराया, उसको न्याय मिली। अब भी मैं वह ही कर रही हूँ, और दूसरों को

करने के लिए प्रेरित भी कर रही हूँ। सत्य यह एक लंबी यात्रा है - और सत्य इसकी छाया जब यहाँ अपराधियाँ मुँह उठाकर घूमने का तरीका समाप्त न हो और निरपराधियाँ शिक्षित ~~भी~~ न हो, उसको न्याय मिले, तब तक यह यात्रा जारी रखेंगे हम।"

वहाँ से निकलते समय उसकी होठ में ~~मुस्कुरा~~ एक मुसकान थी। सत्य की मुसकान। इस यात्रा में कई कदम बाकी है। इस रास्ते में पत्थर और काँटा जरूर होगा, किन्तु उस लक्ष्य इस यात्रा को इतना मीठा बनाती है, कि हम उस मुश्किलें आसानी से भूल पाएँगे। "जारी रखना है हमें.. इस सत्य की यात्रा.. अपने लिए.. और आगे की पीढ़ी के लिए भी..."